



सतना जिले के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं प्रेरणाओं पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सारिका गर्ग^{1*}, डॉ. आशीष यादव²

1. शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

sarikadwvdi28@gmail.com ,

2. एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: हमारे देश की आजादी के बाद महात्मा गांधीजी, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर और कई अन्य नेताओं जैसे महान नेताओं, समाज सुधारकों के प्रयासों के कारण कई सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक परिवर्तन हुए हैं। आजादी के बाद संविधान और सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों की स्थिति में सुधार के लिए कई योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करने में संलग्न अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की उपलब्धियों, आकांक्षाओं एवं प्रेरणाओं को जानना है। यह बेरोजगारी की समस्याओं को हल करने और आदिवासी जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में शिक्षा के महत्व के बारे में भी जानना है। इस प्रकार, अनुसूचित जनजाति के छात्रों के बीच हो रही शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बारे में जानना है। अध्ययन से पता चलता है कि सतना जिले के अधिकांश छात्र अपनी आर्थिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनका भय और हीन भावना उनकी शिक्षा की निरंतरता में बाधा थी। अधिकांश छात्रों का कहना है कि उनकी गरीबी के कारण वे शैक्षणिक संस्थान में शामिल नहीं होते हैं और शैक्षिक रूप से पिछड़े रहते हैं। उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा से उनकी स्थिति में सुधार होगा। अधिकांश लोगों को लगता है कि या तो हीन भावना के कारण या उचित समय पर उचित सुविधाओं की कमी के कारण अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी धीमी गति से परिवर्तन का कारण है। अधिकांश छात्र शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में बहुत आश्वस्त हैं।

मुख्य शब्द: अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, संविधान, अनुच्छेद, साक्षरता, संवैधानिक प्रावधान

----- X -----

परिचय

मानव समाज समानता और अंतर पर आधारित है; अलग-अलग उम्र, लिंग और व्यक्तिगत प्रवृत्ति के लोग इसे बनाते हैं। इस असमानता ने काम करने और स्थिति हासिल करने में असमानता पैदा की है, इसे सामाजिक भेदभाव कहा जाता है। भारत अलग-अलग भाषा, धर्म, नस्ल और जाति और सांस्कृतिक समूहों का अनूठा देश है। जाति व्यवस्था भारत में पाए जाने वाले सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख और अजीबोगरीब रूप है, जिसे वैदिक वामा व्यवस्था से पूरे युग में बढ़ावा मिला है।

देश के अंदर और बाहर के प्रख्यात विद्वानों द्वारा जाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के बावजूद भी इसकी जटिल प्रकृति का निष्पक्ष अध्ययन किया जाना चाहिए। जाति, संयुक्त परिवार और ग्रामीण जीवन शैली भारतीय सामाजिक संगठन के आधार हैं। यह जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण के रूपों में से एक है और इसकी वृद्धि और विकास में अद्वितीय और मूल है। जाति व्यवस्था अपनी विशेषता में विशिष्ट होने के कारण देश को विभिन्न भागों में विभाजित करती है। रिस्ले के कथन के अनुसार "जाति सामान्य बोली या आनुवंशिकता द्वारा मान्यता प्राप्त परिवारों का समूह है। इस प्रकार जाति वंशानुगत, अंतर्विवाही और आमतौर पर एक स्थानीय समूह है जिसका वंशानुगत व्यवसाय के साथ पारंपरिक जुड़ाव है और पवित्रता और प्रदूषण (एम.एन.श्रीनिवास) की अवधारणा के साथ सामाजिक पदानुक्रम में एक विशेष स्थान रखता है। इस प्रकार खान-पान, पहनावा, विवाह, मृत्यु-संस्कार आदि में प्रत्येक जाति भिन्न-भिन्न होती है, उसी प्रकार प्रत्येक जाति धार्मिक, क्षेत्रीय भाषा, रीति-रिवाजों आदि का पालन करने वाली भिन्न-भिन्न उपजातियों में विभाजित हो जाती है।

दो प्रमुख नस्लीय लोगों ने भारत के स्तर में सबसे निचले तल पर कब्जा कर लिया और फिर भी सामाजिक कलंक से पीड़ित होने के कारण उन्हें कानूनी दृष्टि से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। आजादी के बाद भी इन दोनों समूहों का वर्गों का शोषण किया जा रहा है। एसवी केतकर के अनुसार, 'जाति' शब्द की उत्पत्ति स्पेनिश शब्द "कास्ता" में हुई है जिसका अर्थ है 'जाति', 'नस्ल', या 'एक जटिल या वंशानुगत गुण'। इस प्रकार, पुर्तगालियों ने इस शब्द का इस्तेमाल उन लोगों के नामकरण के

लिए किया जो एक ही नस्ल के थे। जाति जातीय शुद्धता बनाए रखने के लिए बनाई गई संस्था है।

अनुसूचित जाति/ जनजाति की अवधारणा

ये ऐसे लोग हैं जो कई सामाजिक, नागरिक, धार्मिक और आर्थिक अक्षमताओं से पीड़ित हैं। ये वंचित और शोषित जातियाँ हैं जिन्हें 'दलित' कहा जाता है, उदाहरण के लिए हरिजन, मडिगा आदि। सामाजिक वर्ग सामाजिक स्तरीकरण का खुला रूप है जो लगभग सभी औद्योगिक और पश्चिमी समाजों में पाया जाता है और वर्ग व्यवस्था में व्यक्ति का कौशल, शिक्षा और विशेषज्ञता व्यक्ति की स्थिति निर्धारित करती है। अंग्रेजी शब्द 'ट्राइब' लैटिन भाषा 'ट्रिबिस' से बना है, जिसका अर्थ है कि लोगों का समूह एक ही जाति से आता है। अनुसूचित जनजाति भारत में रहने वाली आदिम या अनुसूचित जनजाति है। डॉ. डी.एन.मजूमदार ने अनुसूचित जनजाति को 'एक सामान्य नाम रखने वाले परिवारों के समूह या समूह के रूप में परिभाषित किया है, जो एक ही क्षेत्र में रहते हैं, एक ही भाषा बोलते हैं और विवाह, पेशे या व्यवसाय के संबंध में कुछ वर्जनाओं का पालन करते हैं' अनुसूचित जनजाति को 'अनुसूचित जनजाति' कहा जाता है।, 'गिरिजन' या 'अनुसूचित जनजाति लोग'। इस प्रकार, भारत में जनजाति अपनी संस्कृति, बोली, नस्लीय विशेषताओं और प्रकृति में खानाबदोश होने के कारण आदिम और घिनौनी परिस्थितियों में रहने वाले समाज की सबसे निचली परत है। भारत में अधिकांश अनुसूचित जनजातियाँ तीन नस्लीय श्रेणियों जैसे मंगोलोइड्स, नेग्रिटोस और ऑस्ट्रोलाइड्स से संबंधित हैं।

भारत के संविधान के अनुसार अनुसूचित जनजातियाँ "ऐसे अनुसूचित जनजाति समुदाय या भाग या समूह हैं, ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के भीतर जिन्हें संविधान के लिए अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है (अनुच्छेद 366 (25))", स्वतंत्रता से पहले भारत में घुमंतू और अस्त-व्यस्त जीवन जीने वाले वन लोगों के लिए विशेष प्रावधान प्रदान करने के लिए साइमन कमीशन द्वारा "अनुसूचित जनजाति" की शुरुआत की गई है, इस अवधारणा को भारत सरकार द्वारा प्रशासनिक सुविधा के लिए अपनाया गया है। इस प्रकार, आज अधिकांश अनुसूचित जनजाति के लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, विशेष नाम के साथ विशेष क्षेत्र में रहते हैं, अनुसूचित जनजाति के लोग भारतीय समाज में सबसे पिछड़े लोग हैं, उनके आवास, भोजन और कपड़ों की स्थिति जानवरों की स्थिति पर निर्भर करती है। अनुसूचित जनजाति के लोगों की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आय से काफी कम है। उनमें से अधिकांश कर्जदार हैं, साहूकारों और वन ठेकेदारों द्वारा शोषण किया जाता है, उनकी क्रय शक्ति बहुत कम है।

शैक्षिक आकांक्षाएं और प्रेरणा

शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक जीवन में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त करने का साधन है। एक बेहतर जीवन सामान्य रूप से विकास और विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम से ही संभव हुआ है। इसे ध्यान में रखते हुए विश्व के लगभग सभी समकालीन समाजों ने अपने लोगों की शिक्षा को वरीयता दी है। शिक्षा का व्यक्ति के भविष्य पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, इसलिए शिक्षा को अक्सर उज्ज्वल भविष्य की कुंजी कहा जाता है। आधुनिक समाज में शिक्षा मानव संसाधन विकास के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है। यह लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है और वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए देश के मानव संसाधनों को विकसित करने में मदद करता है। यह आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, समाज को बदलने में मदद करता है और इसे परंपरावाद और रुढ़िवाद से मुक्त करता है और लोगों को अधिक तर्कसंगत और गतिशील बनाता है।

यह कुछ व्यावसायिक कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक व्यक्तिगत लक्षण उत्पन्न करता है और लोगों को कुशल ज्ञान और व्यवसाय प्रदान करके अपने तर्कहीन दृष्टिकोण और पारंपरिक आदतों को बदलने के लिए बनाता है। इस प्रकार, शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन की सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक पद्धति में से एक माना जाता है।

अंतर्निहित कारणों से, समुदाय के वृद्ध लोग शिक्षा के महत्व को महसूस नहीं कर सकते और वे खुद को और अपने बच्चों को शिक्षित नहीं कर सकते। मातागरीबी की पिता-, निरक्षरता, मासूमियत और शिक्षा के लाभों के बारे में जानकारी न देने जैसे कारण हैं और इस समुदाय की अधिकांश महिलाएं जो अपने पुरुष और घरों की देखभाल करने और अपने बच्चों का सामाजिककरण करने

के लिए जिम्मेदार हैं, वे अनपढ़, गरीब, यहां तक कि पारंपरिक व्यवसाय भी थे। इतने वर्षों तक खेती, शिकार और अन्य जो इन समूहों को अनपढ़ दुनिया में रखने के लिए जिम्मेदार थे।

अतीत में भी कल्याणकारी उपायों को लागू किया गया था और इन अनुसूचित जाति ब्रिटिश को समुदायों जनजाति अनुसूचित / 5,1857 दौरान के शासन मई से देना शुरू किया गया था, इन छात्रों को स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उनके पास कुछ योजनाएं और कार्यक्रम थे। और भारत की आजादी के बाद भी, केंद्र और राज्य सरकारें इन समुदायों के लोगों को शिक्षित और पेशेवर रूप से शिक्षित करने के लिए अलगबनाने सहायता वित्तीय और फंड अलग-विशेष कार्यक्रम और योजनाएं बनाने के लिए कई कानून पारित करने के लिए ईमानदारी से प्रयास कर रही हैं। इस प्रकार अनुसूचित जनजातियों को प्रोत्साहन और प्रेरणा की इन सभी शर्तों के बावजूद, शिक्षा विकास बहुत कम है, इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने वाले इन समुदायों का आंदोलन इतना संतोषजनक नहीं है।

अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यावसायिक लक्ष्य और उद्देश्य

यह प्रवृत्ति आज अनुसूचित जनजाति के छात्रों में पाई जा रही है जो शिक्षा प्राप्त करने में शामिल हैं, अपने पुराने मूल जाति के व्यवसायों को अस्वीकार कर रहे हैं और नए आधुनिक युग के व्यवसायों को स्वीकार कर रहे हैं। प्राचीन काल में समाज व्यवसायों के आधार पर विभाजित था। मूल रूप से, यह वामा समाज था, जहां इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में चार वामों में विभाजित किया गया था, जो चार व्यवसायों जैसे कि शिक्षण, रक्षा, व्यवसाय और दास सेवा का प्रतिनिधित्व करते थे और समय के साथ, ये वामा वर्तमान जाति में विकसित हुए। चूंकि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों ने समाज में सबसे कम लोगों पर कब्जा कर लिया है और शूद्रों ने समाज के ऊपरी तबके को नौकरशाही सेवा प्रदान की है। भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत के बाद, अंग्रेजों ने समाज की जाति व्यवस्था की कुछ बुराइयों को दूर करने की कोशिश की, इस संबंध में कुछ कानूनों और कानूनों को पारित करते हुए उन्होंने ईमानदारी से प्रयास किया, और स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने संविधान में कुछ अधिकारों और कर्तव्यों को शामिल किया।

अनुसूचित जनजाति समुदायों में विभिन्न समूह हैं और इन सभी समूहों में आर्थिक स्थिति समान नहीं है, कुछ समूह बहुत गरीब हैं और कुछ अन्य समूह आर्थिक रूप से मजबूत हैं। इन दिनों भी अधिकांश आदिवासी समूह अपने पारंपरिक व्यवसायों से बाहर नहीं आए हैं जो इतने लाभदायक नहीं हैं जैसे कि फल, जड़ और ट्यूब, शहद और अन्य वन उत्पादों का संग्रह और शिकार, मछली पकड़ना और भूमि पर खेती करना। इसके अलावा, उनमें से बहुत कम लोगों ने अपना व्यवसाय बदल लिया है और कुछ हद तक विकास कर रहे हैं और ये कुछ ऐसे हैं जो सरकार द्वारा दिए गए शिक्षा और अन्य लाभों से प्रभावित हुए हैं।

ब्रिटिश शासन के दौरान, उन्होंने दो चीजों के बारे में सोचा कि क्या उन्हें अलग रखना है या उन्हें मुख्य समाज के साथ आत्मसात करना है? हालांकि, उन्होंने पुनर्वास या उन्हें जीवन की मुख्य धाराओं में एकजुट करने के बारे में सोचा या प्रयास नहीं किया। यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनुसूचित जनजातियों के प्रति सरकार की नीतियों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। अनुसूचित जनजातियों की सादगी, मासूमियत, नैतिकता और संतोष को देखने के बाद, भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कुछ संवैधानिक सुरक्षा और सुविधाएं प्रदान कीं। इसके अलावा, पहले कानून मंत्री डॉ. बीआर अम्बेडकर के नेतृत्व में संवैधानिक प्रावधान प्रदान किए गए हैं और अनुसूचित जाति और कानून लिए के सशक्तिकरण के जनजाति अनुसूचित / हैं। गए बनाए कानून इस प्रकार इन कमजोर वर्गों पर सरकार और नेताओं के इन ईमानदार प्रयासों के प्रभाव के कारण, इन अनुसूचित जनजाति समुदायों के आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक पहलुओं में कुछ बदलाव हो रहे हैं। इस प्रकार, वर्तमान समाज में बदलते राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने में शामिल अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यावसायिक उद्देश्यों और उद्देश्यों को जानने का प्रयास यहां किया गया है। यह पाया गया है कि व्यावसायिक शिक्षा पूर्ण करने वाले छात्र सरकारी और अर्ध-रखते आकांक्षा की नौकरियों सरकारी-

सतना जिले में अनुसूचित जनजाति

2011 की भारतीय जनगणना के अनुसार, सतना की कुल जनसंख्या 280,222 थी, जिसमें से 147,874 पुरुष और 132,348

महिलाएं थीं। 0 से 6 वर्ष के आयु वर्ग की जनसंख्या 32,774 थी। सतना में साक्षरता की कुल संख्या 209,825 थी, जो जनसंख्या का 74.9% था जिसमें पुरुष साक्षरता 79.5% और महिला साक्षरता 69.7% थी। सतना की 7+ जनसंख्या की प्रभावी साक्षरता दर 84.8% थी, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 90.1% और महिला साक्षरता दर 78.9% थी। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या क्रमशः 38,978 और 9,381 थी। 2011 में सतना में 54699 घर थे। जनसंख्या जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार,

तालिका 1 : सतना जिले के बारे में कुछ त्वरित तथ्य निम्नलिखित हैं।

	कुल	पुरुष	महिला
बच्चे (उम्र 0-6)	330,661	173,093	157,568
साक्षरता	72.26%	69.21%	53.27%
अनुसूचित जाति	398,569	205,987	192,582
अनुसूचित जनजाति	319,975	163,166	156,809
निरक्षर	857,154	356,444	500,710

साहित्य की समीक्षा

डॉ. एम. कुशवाहा, (2012) ने प्राथमिक शिक्षा पर स्कूली भाषा के प्रभाव - घरेलू भाषा के अंतर का अध्ययन किया। देश की भाषाई विविधता के कारण अधिकांश बच्चों की स्कूली भाषा उनकी घरेलू भाषा से भिन्न हो सकती है, विशेषकर पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए। यह एक महत्वपूर्ण कारक है जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों की शिक्षा में बाधा डालता है। उनके अध्ययन में इस समस्या को दूर करने के लिए यूपी के वाराणसी जिले के स्कूलों में किए गए प्रयासों का अवलोकन किया गया।

मधुरिमा चौधरी और अत्रेयी बनर्जी (2013) ने शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2010 के विशेष संदर्भ में शिक्षा के अधिकार के रूप में शिक्षा के अधिकार के प्रति वंचित समूहों की शिक्षा की स्थिति और जागरूकता का पता लगाने का इरादा रखते हैं। शिक्षा व्यक्ति के गुप्त गुणों को प्रकट करने का प्रयास करती है, जिससे व्यक्ति का पूर्ण विकास होता है। जैसे, इसे व्यक्ति के विभिन्न शारीरिक बौद्धिक, सौंदर्य और नैतिक संकायों को विकसित करने, या बनाने, विकसित करने की क्रिया या कला के रूप में वर्णित किया गया है। अनुसूचित जनजाति का सामाजिक और आर्थिक अभाव का इतिहास रहा है, और उनके शैक्षिक हाशिए पर रहने के अंतर्निहित कारण भी आश्चर्यजनक रूप से भिन्न हैं। इन समुदायों के लगभग 87 प्रतिशत मुख्य श्रमिक प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियों में लगे हुए थे। अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर लगभग 47 प्रतिशत है, जबकि राष्ट्रीय औसत 74.04 प्रतिशत है। अनुसूचित जनजाति की तीन-चौथाई से अधिक महिलाएं अशिक्षित हैं। आश्चर्य नहीं कि संचयी प्रभाव यह रहा है कि गरीबी रेखा के नीचे अनुसूचित जनजातियों का अनुपात राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।

अंबुसेल्वी जी., जॉन लेसन पी. (2015) ने आदिवासी बच्चों की शिक्षा और उनके सामने आने वाली बाधाओं पर अध्ययन किया। जनजाति अलग-अलग जीवन शैली और सामुदायिक जीवन वाले लोग हैं। वे निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रह रहे हैं। उनकी अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यता आदि हैं जो उन्हें अन्य आदिवासी समुदाय से अलग बनाती हैं। सामान्य रूप से अनुसूचित जनजातियों का साक्षरता परिदृश्य देश की सामान्य जनसंख्या की साक्षरता दर से कम है। 2001 की जनगणना के अनुसार आदिवासी (47.10%) की साक्षरता दर देश की समग्र साक्षरता (64.84%) से काफी कम है।

टी. ब्रह्मानंदम एंड टी. आदिवासी शिक्षा पर बोसु बाबू (2016) के अध्ययन से पता चलता है कि नीति निर्माताओं के दृष्टिकोण ने सांस्कृतिक रूप से जुड़ी शिक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया। अनुसूचित जनजाति भौगोलिक रूप से, सामाजिक रूप से अलग-थलग और आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदाय हैं। स्वतंत्रता के बाद के समय में आदिवासियों के आर्थिक और शैक्षिक विकास के लिए गंभीर और ठोस प्रयास किए गए। इन प्रयासों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में जनजातियों का प्रदर्शन अनुसूचित जातियों की तुलना में काफी कम है। इससे स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है और उनकी समग्र शैक्षिक स्थिति पर सीधा प्रभाव पड़ा है।

डीके श्यामल (2017) ने पश्चिम बंगाल में आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति को बनाए रखने के लिए पुरुलिया जिले पर विशेष जोर दिया, जो साक्षरता, गरीबी, स्वास्थ्य के मामले में पश्चिम बंगाल का सबसे कमजोर जिला है। भारतीय जनगणना के अनुसार, 7 वर्ष या उससे अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति जो किसी भी भाषा में समझ के साथ पढ़ और लिख सकता है, साक्षर माना जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार पश्चिम बंगाल की कुल जनसंख्या 91347736 है जिसमें आदिवासियों की संख्या 5296953 है जो कुल जनसंख्या का 5.79% है। इस भूमि के आदिवासियों को सबसे पिछड़ा, हाशिए पर और वंचित समुदाय माना जाता है। यह स्पष्ट है कि ये लोग आधुनिकीकरण और तकनीकी प्रगति के फल से दूर हैं। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि शिक्षा ही एकमात्र हथियार है जो सबाल्टर्न वर्ग को उनके पिछड़ेपन और अभाव के पुराने अभिशाप से मुक्त कर सकती है।

गुरशरण सिंह, और बेअंत सिंह (2018) ने भारत में अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा का अध्ययन किया। शिक्षा परिवर्तन और सामाजिक विकास का प्रमुख साधन है जो बच्चे को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और हाशिए की आबादी को गरीबी से बाहर निकालने में मदद करती है। भारत एक समृद्ध विविधता वाला देश है जो संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और नस्लीय श्रेणियों की भीड़ में परिलक्षित होता है। अनुसूचित जनजाति समाज के पिछड़े वर्गों या ऐतिहासिक रूप से वंचित निचले समूहों की प्रमुख श्रेणियों में से एक है। स्वतंत्रता के बाद से औपचारिक शिक्षा को बढ़ावा देने के कई अभियानों के बावजूद, अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता दर कम रही है और महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर की तुलना में अभी भी कम है। अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शिक्षा केवल समुदायों के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती है। भारत लगभग 85 मिलियन की जनजातीय आबादी का घर है, जिसमें 700 से अधिक समूह प्रत्येक संवैधानिक दायित्वों के साथ हैं, लेकिन साथ ही उनकी विशिष्ट संस्कृतियों, सामाजिक प्रथाओं, धर्मों, बोलियों और व्यवसायों के साथ आदिवासियों के समग्र विकास के लिए एक महत्वपूर्ण इनपुट के रूप में और सभी राज्यों और संघ में बिखरे हुए हैं।

राजीव भास्कर एट अल। (2019) ने दो संबंधित मुद्दों को देखते हुए इन विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन किया। केरल विकास मॉडल के लाभों के बावजूद, पश्चिमी घाट में आदिवासी समुदायों का बहिष्कार एक नीतिगत चिंता का विषय बना हुआ है। जबकि मॉडल केरल की आबादी के बड़े हिस्से की जीवन स्थितियों का उत्थान करने में सक्षम था, यह राज्य में उच्च स्तर के आर्थिक और सामाजिक और असमानता पैदा करने के लिए भी जिम्मेदार है। खाद्य सुरक्षा, आवास और आत्म-सशक्तिकरण के संबंध में जनजातियों की आजीविका में सुधार लाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार और भारत के राज्यों ने कई विशिष्ट योजनाएं और कार्यक्रम लागू किए हैं। सबसे पहले, हमने विकास निधियों की उपयोग दर को देखा। दूसरा, हमने विकास योजनाओं के प्रभाव के बारे में लाभार्थियों की अपनी धारणाओं के बारे में जानकारी एकत्र की। इस जानकारी को इकट्ठा करने के लिए, हमने वायनाड और इडुक्की के आदिवासी जिलों में 200 घरों के एक नमूने के लिए एक सर्वेक्षण लागू किया। हम यह तर्क देकर निष्कर्ष निकालते हैं कि केरल में विकास निधियों की उपयोग दर समग्र रूप से अपर्याप्त है, और विकास योजनाओं के दिन-प्रतिदिन के कामकाज के संबंध में आयोजित चिंताओं की एक श्रृंखला की ओर इशारा करते हुए। विकास निधियों के उपयोग की दर में वृद्धि और योजनाओं के क्रियान्वयन और प्रबंधन के संबंध में जनजातीय समुदायों द्वारा उठाई गई चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, निश्चित रूप से पश्चिमी

घाट में आदिवासी आबादी की आजीविका में सुधार करने के लिए काम करेगा।

टिमी थॉमस (2020) ने सामाजिक राजनीतिक आंदोलनों और अन्य स्वैच्छिक संगठनों में आदिवासी लोगों की भागीदारी के माध्यम से आदिवासी विकास को व्यक्त करते हैं। भारत की जनजातियाँ जो अधिकतर वन क्षेत्रों में निवास करती हैं, अपने भरण-पोषण के लिए वन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं। उनकी गतिविधियाँ ज्यादातर वन सीमा तक ही सीमित हैं। आदिवासी लोग 150 से अधिक समूहों के साथ भारत की कुल आबादी का 8% हैं। वायनाड जिसे पारंपरिक रूप से 'जंगलों की भूमि' के रूप में जाना जाता है, इसके अंदरूनी हिस्से में ज्यादातर जनजातियों का निवास है। कुल चार लाख आदिवासी आबादी में से आधे से अधिक वायनाड के अंदरूनी इलाकों में पाए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि ये जनजातियाँ वायनाड क्षेत्र की मूल निवासी हैं। लोगों की भागीदारी बातचीत और संचार का एक विशेष रूप है जिसका अर्थ है शक्तियों और जिम्मेदारियों का बंटवारा। लोग विशेष रूप से आदिवासी लोग आम कल्याण और दूसरों के लाभ के लिए अपना योगदान देने के लिए आगे आए।

श्रीमती वीनू (2021) ने भारत में आदिवासी समुदायों के सामने आने वाले प्रमुख मुद्दों और समस्याओं पर उनकी शैक्षिक समस्या के विशेष संदर्भ में चर्चा किया। जनजातियों का एक अलग सांस्कृतिक पैटर्न के साथ जीने का एक अलग तरीका है। कुछ राज्यों में मध्य प्रदेश में बियाघा, भील और कोल और बिहार, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में मुंडा जैसे आदिवासी समुदायों की अधिकतम संख्या है। वे पर्याप्त संसाधनों के बिना एक दयनीय जीवन जीते हैं और उनके पास आर्थिक समस्या, निरक्षरता, बेरोजगारी, आवास और पोषण की समस्या जैसे बहुत सारे मुद्दे और समस्याएँ हैं। आदिवासी समुदायों को बहुत सी शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है; इसलिए सरकार विशिष्ट कानूनों को लागू करके इन सभी समस्याओं को हल करने की पूरी कोशिश कर रही है। इसके अलावा शोधकर्ता जनजातियों के उत्थान के लिए सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों पर ध्यान केंद्रित करता है और शैक्षिक समस्या को हल करने के लिए प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा करता है।

उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करने में संलग्न अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की उपलब्धियों, आकांक्षाओं एवं प्रेरणाओं को जानना है।

परिकल्पना

1. गरीबी के कारण अनुसूचित जनजाति शिक्षा में पिछड़ रही है।
2. शिक्षा प्राप्त करने वाले अनुसूचित जनजाति के छात्रों में उच्च शैक्षिक आकांक्षाएं होती हैं।

समंक विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 2: शिक्षा प्राप्त करने के कारण

प्रमुख कारण	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत दर
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
आर्थिक सुरक्षा बढ़ाता है	04 (22.23)	15 (65.21)	27 (71.06)	54 (76.06)	100	66.67

यह सामाजिक स्थिति को बढ़ाता है	10 (55.4)	06 (26.09)	07 (18.42)	10 (14.09)	33	22.00
अन्य कारण	04 (22.23)	02 (8.69)	04 (10.52)	07 (9.85)	17	11.33
कुल	18	23	38	71	150	100.00

नोट1 : 'अन्य' कारण 'अच्छे नागरिक' बनने का संकेत देते हैं, 2. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े प्रतिशत दर्शाते हैं।

तालिका संख्या 1 के अनुसार यह स्पष्ट है कि 66.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उल्लेख किया कि शिक्षा से आर्थिक सुरक्षा में वृद्धि होगी जिससे जीवन की सुरक्षा होगी, उनमें से 22 प्रतिशत ने कहा कि यह निश्चित रूप से सामाजिक स्थिति में सुधार करता है और अन्य अर्थात् 11.33 प्रतिशत के पास है सहमत थे कि यह लोगों को अच्छा नागरिक बनाएगा। यहां अधिकांश उत्तरदाताओं ने कारण बताया कि वे अपनी आर्थिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस तथ्य से अवगत हैं कि शिक्षा व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा को बढ़ाती है।

तालिका 3: उत्तरदाताओं को शिक्षा के लिए प्रेरणा

प्रमुख कारण	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत दर चिकित्सा
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
पिता	06 (33.33)	09 (39.13)	17 (44.73)	44 (61.97)	76	50.66
माता	05 (27.77)	04 (17.39)	07 (18.44)	07 (18.44)	27	18.00

भाइया	03 (16.66)	03 (13.06)	05 (13.16)	05 (13.16)	20	13.34
रिश्तेदार	02 (11.12)	05 (21.73)	06 (15.78)	06 (15.78)	17	11.34
अन्य	02 (11.12)	02 (8.69)	03 (7.89)	03 (7.89)	10	6.67
कुल	18	23	38	71	150	100.0

तालिका 2 से पता चलता है कि 150 उत्तरदाताओं में से 50, 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अपने पिता से प्रेरित हैं, 18 प्रतिशत अपने भाइयों से, 13.34 प्रतिशत अपने रिश्तेदारों और रिश्तेदारों से और उनमें से बहुत कम यानी लगभग 6.67 प्रतिशत थे। दूसरों से प्रेरित, जिसमें कुछ संगठन, गाँव के महत्वपूर्ण व्यक्ति और समुदायों के नेता शामिल हैं। यहाँ हम देख सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने अपने पिता से प्रेरणा ली है। इस जानकारी से हमें पता चलता है कि माताके शिक्षा परिजन और पिता-अलावा इसके हैं। रहे कर प्रोत्साहित लिए के शिक्षा की तरह इस को बच्चों अपने और हैं रहे हो जागरूक में बारे के महत्व, अपने माताअलावा के नेताओं के समुदाय जैसे रिश्तेदार और पिता-, परोपकारी लोग पढ़ाई के लिए भौतिक रूप से प्रेरित करने के लिए आगे आ रहे हैं।

तालिका 4: शिक्षा में कमी के लिए प्रतिवादी की राय

प्रमुख कारण	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
गरीबी	10 (55.56)	06 (26.08)	15 (39.47)	45 (63.38)	76	50.67
मार्गदर्शन की कमी	07 (11.12)	10 (43.49)	08 (21.05)	11 (15.49)	36	20.67

अनपढ़ माता-पिता	04 (22.20)	05 (21.74)	10 (26.33)	09 (12.67)	28	18.66
अन्य	02 (11.12)	02 (8.09)	05 (13.15)	06 (8.45)	15	10.00
कुल	18	23	38	71	150	100.00

नोट1 : 'अन्य' अरुचि और नीच व्यक्ति को दर्शाता है।

उपरोक्त तालिका संख्या 3 इंगित करती है कि, और सके कर नहीं प्राप्त शिक्षा माता-पिता उनके कि बताया ने उत्तरदाताओं 50.67 किया महसूस ने उत्तरदाताओं 20.67 ,होगी बाधा बड़ी सबसे गरीबी अत्यधिक में अनुसरण के पेशे और शिक्षा उनकी कि लगा उन्हें न माता-पिता उनके किहीं कर सकते थे इस प्रकार की शिक्षा, उनके पास कोई जानकारी नहीं थी, यहां तक कि वर्तमान पीढ़ी को भी लगता है कि उनके पास कोई उचित जानकारी नहीं है इसलिए उन्हें इसे जारी रखने में कठिनाई होती है। कुछ उत्तरदाताओं के लिए जो कि 18.66 प्रतिशत है, अनपढ़ और अज्ञानी माताथे जिम्मेदार लिए के रखने जारी से रूप सुचारु को शिक्षा उनकी पिता-उत्तरदाताओं और 'अन्य' से संबंधित थे, उन्होंने बताया कि उनका भय और हीन भावना उनकी शिक्षा की निरंतरता में बाधा थी। यह परिकल्पना (1) का समर्थन करता हैव्यावसायिक जनजाति अनुसूचित कारण के गरीबी : शिक्षा में पिछड़ रही है।

तालिका 5: अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन के बारे में प्रतिवादी की राय

प्रमुख कारण	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
सांस्कृतिक पिछड़ा	03 (16.65)	02 (8.69)	03 (7.89)	07 (9.85)	15	10.00
पारिवारिक कारण	04 (22.20)	03 (13.00)	10 (26.33)	15 (21.12)	32	21.34
वित्तीय कठिनाई	06 (33.33)	15 (65.32)	17 (44.73)	38 (53.52)	76	50.66

उदासीनता	03 (16.65)	02 (08.69)	05 (13.16)	06 (8.45)	16	10.66
हीनता	02 (11.17)	01 (4 30)	03 (7 89)	05 (7.06)	11	07.34
कुल	18	23	38	71	150	100.00

150 उत्तरदाताओं में से 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि उनके सांस्कृतिक पिछड़ेपन के कारण 21.34 प्रतिशत ने बताया कि पारिवारिक पिछड़ापन महिलाओं के पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है, 50.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके सांस्कृतिक पिछड़ेपन के कारण इनमें से 10.66 प्रतिशत का कहना है कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में कोई दिलचस्पी नहीं है और शेष 7.34 प्रतिशत पिछड़े हैं क्योंकि उनमें हीनता की भावना है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि यह उनकी गरीबी के कारण है कि वे शैक्षणिक संस्थान में शामिल नहीं होते हैं और शैक्षिक रूप से पिछड़े रहते हैं।

तालिका 6: उत्तरदाताओं की उनके अध्ययन के लिए आय के स्रोत

आय का स्रोत	शैक्षिक रूप				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
छात्रवृत्ति	05 (27.78)	07 (30.44)	12 (31.44)	35 (49.39)	59	39.34
अभिभावक	05 (44.45)	08 (34.78)	13 (34.23)	17 (23.92)	46	30.66
मित्र	03 (61.65)	02 (8.69)	05 (13.15)	09 (12.60)	19	12.66

अन्य	02 (11.20)	06 (26.08)	08 (21.05)	10 (14.09)	26	17.34
कुल	18	23	38	71	150	100.00

नोट 1 : अन्य में स्वहैं। शामिल रिश्तेदार और वाले करने काम-

तालिका संख्या 5 उत्तरदाताओं को उनके अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए आय के स्रोतों के बारे में सूचित करती है। यह दर्शाता है कि 39.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं को छात्रवृत्ति मिलती है, 30.66 प्रतिशत को अपने माता 12.66, से पिता- प्रतिशत दोस्तों से, और शेष 17.34 प्रतिशत स्वरोजगार या रिश्तेदारों से आय प्राप्त होती है। अधिकांश उत्तरदाता अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए या तो छात्रवृत्ति या माता हैं। निर्भर पर पिता-

तालिका 7: इस बारे में राय कि क्या शिक्षा ने उनकी स्थिति में सुधार किया है

राय	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
हां	14 (77.77)	20 (86.95)	33 (86.84)	08 (95.77)	135	90.00
नहीं	04 (23.23)	03 (13.05)	05 (13.16)	03 (4.25)	015	10.00
कुल	18	23	38	71	150	100.0

इस सवाल का जवाब कि क्या शिक्षा ने उत्तरदाताओं की स्थिति में सुधार किया है, तालिका संख्या 5.10 में दिखाया गया है। यह बहुत स्पष्ट है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षा ने उनकी स्थिति में सुधार किया है और उनमें से केवल 10 प्रतिशत का कहना है कि शिक्षा ने उनकी स्थिति में सुधार करने में मदद नहीं की है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि शिक्षा से उनकी स्थिति में सुधार होगा। चूंकि शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्जा देती है और सामाजिक सम्मान प्राप्त करने में मदद करती है, उच्च शिक्षा भी उत्तरदाताओं की सामाजिक स्थिति को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

तालिका 8: शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अनुसूचित जनजातियों में धीमी गति से परिवर्तन का कारण

प्रमुख कारण	उत्तरदाता				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
सांस्कृतिक भेदभाव	06 (33.35)	07 (30.44)	13 (34.23)	15 (21.11)	41	27.33
हीन भावना	09 (50.00)	05 (21.73)	07 (18.42)	26 (36.64)	47	31.33
उचित समय पर उचित सुविधाओं का अभाव	03 (16.65)	11 (47.83)	18 (47.35)	30 (42.25)	62	41.35
कुल	18	23	38	71	150	100.00

उत्तरदाताओं के विचार तालिका संख्या 7 में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अनुसूचित जनजातियों में हो रहे धीमे परिवर्तनों के बारे में पूछे गए हैं। इससे पता चलता है कि 27.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनकी सांस्कृतिक भिन्नता के कारण अनुसूचित जनजातियों में धीमी गति से परिवर्तन होता है, 31.33 प्रतिशत का कहना है कि यह आपस में हीन भावना की उपस्थिति के कारण है और शेष 41.35 प्रतिशत का मानना है कि यह कमी सुविधाओं और उचित समय के कारण है। उपरोक्त तालिका यह स्पष्ट करती है कि अधिकांश लोगों को लगता है कि या तो यह हीन भावना के कारण है या उचित समय पर उचित सुविधाओं की कमी के कारण अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी धीमी गति से परिवर्तन का कारण है।

तालिका 9: शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने लक्ष्य तक पहुँचने की संभावना

राय	उत्तरदाता				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
हां	16 (88.89)	22 (95.65)	36 (94.73)	69 (97.18)	143	95.33

नहीं	02 (11.11)	01 (4.35)	02 (5.27)	02 (2.82)	007	04.67
कुल	18	23	38	71	150	100.00

तालिका संख्या 8 इस बात पर प्रकाश डालती है कि उत्तरदाता शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में क्या महसूस करते हैं। यह दर्शाता है कि 95.33 उत्तरदाताओं को लगता है कि वे शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे और लगभग 4.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का बहुत कम प्रतिशत महसूस करता है कि वे शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होंगे। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में बहुत आश्वस्त हैं।

तालिका 10: उत्तरदाता शैक्षिक आकांक्षाएं

आकांक्षाओं	उत्तरदाताओं				कुल	प्रतिशत
	चिकित्सा	तकनीकी	कानून	अन्य		
Ph.D	00	00	09 (23.69)	11 (15.49)	20	13.33
M.Ed	00	00	00	60 (84.51)	60	40.00
L.L.M.	00	00	29 (76.31)	00	29	19.39
M.D	10 (55.50)	00	00	00	10	06.66
M.D.S	08 (44.44)	00	00	00	08	05.37
M.E	00	17 (73.91)	00	00	17	11.34
M.Tech	00	06 (26.09)	00	00	06	14.00

कुल	18	23	38	71	150	100.00
-----	----	----	----	----	-----	--------

उपरोक्त तालिका संख्या 9 उत्तरदाताओं की अपने क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है, यह बताती है कि 13.33 प्रतिशत पीएचडी करने की इच्छा रखते हैं, 40 प्रतिशत एम।एड., एड. प्रतिशत एलएल.एम. और 6.66 केवल प्रतिशत एम।एड. प्रतिशत एम।एड. प्रतिशत एम।एड., और शेष 14 प्रतिशत एम।एड. रखते इच्छा की टी. करने। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं की आकांक्षा है या तो एम।एड., या पीएचकरें। पीछा का डी.डिग्री। कुछ उत्तरदाताओं द्वारा अपने पाठ्यक्रम में पीएचडी और मास्टर डिग्री चुनने और अधिक संख्या में स्नातक पाठ्यक्रमों को चुनने और अधिक संख्या में उत्तरदाताओं द्वारा अपनी शिक्षा को डिग्री तक सीमित करते हुए संतुष्ट होने की यह प्रवृत्ति उत्तरदाताओं की बदलती आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। कुछ हद तक संपन्न और आर्थिक रूप से मजबूत लोग अपनी मास्टर डिग्री पूरी करने में सक्षम होंगे, क्योंकि पीएचमें नौकरी भी किसी और है पड़ता करना खर्च पैसा सारा बहुत लिए के पाठ्यक्रमों उच्च अन्य और डी. हालांकि है। पड़ता खींचना को दिनों बिना किए शामिल, चूंकि जनजातीय समुदाय में अधिकांश उत्तरदाता गरीब हैं, इसलिए वे अपनी न्यूनतम डिग्री पूरी करते ही कुछ सेवाओं में शामिल होना चाहते हैं। इसलिए, हमें ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या अधिक मिलती है जो स्नातक की डिग्री प्राप्त करना चाहते थे और उनसे संतुष्ट रहना चाहते थे। यह दर्शाता है कि परिकल्पना 2: "अनुसूचित जनजाति के छात्रों में उच्च शैक्षिक आकांक्षाएं होती हैं बहुत से उनमें इसलिए हैं आती कठिनाइयां उन्हें में करने प्राप्त उन्हें लेकिन " हैं। करते महसूस को महत्वाकांक्षा की डिग्री मास्टर उच्च ही कम

निष्कर्ष

सतना जिले के अधिकांश छात्र अपनी आर्थिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि अधिकांश छात्र इस तथ्य से अवगत हैं कि शिक्षा व्यक्ति की आर्थिक सुरक्षा को बढ़ाती है। उनके माता-पिता और परिजन शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक हो रहे हैं और अपने बच्चों को इस तरह की शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसके अलावा, माता-पिता और रिश्तेदार जैसे समुदाय के नेताओं के अलावा, परोपकारी लोग पढ़ाई के लिए भौतिक रूप से प्रेरित करने के लिए आगे आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनका भय और हीन भावना उनकी शिक्षा की निरंतरता में बाधा थी। यह परिकल्पना (1) का समर्थन करता है: गरीबी के कारण अनुसूचित जनजाति व्यावसायिक शिक्षा में पिछड़ रही है। अधिकांश छात्रों का कहना है कि उनकी गरीबी के कारण है वे शैक्षणिक संस्थान में शामिल नहीं होते हैं और शैक्षिक रूप से पिछड़े रहते हैं। उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा से उनकी स्थिति में सुधार होगा। चूंकि शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्जा देती है और सामाजिक सम्मान प्राप्त करने में मदद करती है, उच्च शिक्षा भी उत्तरदाताओं की सामाजिक स्थिति को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अधिकांश लोगों को लगता है कि या तो हीन भावना के कारण या उचित समय पर उचित सुविधाओं की कमी के कारण अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी धीमी गति से परिवर्तन का कारण है। अधिकांश छात्र शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के बारे में बहुत आश्वस्त हैं। चूंकि जनजातीय समुदाय में अधिकांश उत्तरदाता गरीब हैं, इसलिए वे अपनी न्यूनतम डिग्री पूरी करते ही कुछ सेवाओं में शामिल होना चाहते हैं। इसलिए, हमें ऐसे छात्रों की संख्या अधिक मिलती है जो स्नातक की डिग्री प्राप्त करना चाहते थे और उनसे संतुष्ट रहना चाहते थे। यह दर्शाता है कि परिकल्पना 2: "अनुसूचित जनजाति के छात्रों में उच्च शैक्षिक आकांक्षाएं होती हैं" लेकिन उन्हें प्राप्त करने में उन्हें कठिनाइयां आती हैं इसलिए उनमें से बहुत कम ही उच्च मास्टर डिग्री की महत्वाकांक्षा को महसूस करते हैं।

पूरा अध्ययन एक बहुत ही जटिल परिदृश्य को प्रदर्शित करता है और सुझाव देता है कि राज्य के इस क्षेत्र में अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा स्तर में सुधार के लिए लोगों के मन और दृष्टिकोण को बदलने और सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सपना साकार हो सकता है अगर सरकार इस धारणा के साथ देश की शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन में मजबूत और प्रभावी कदम उठाती है कि शिक्षा मनुष्य की पहली प्राथमिकता है और सामाजिक आर्थिक विकास प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है।

संदर्भ

1. कुशवाहा, एम. (2012), इफेक्ट्स ऑफ स्कूल लैंग्वेज होम लैंग्वेज गैप ऑन प्राइमरी एजुकेशन: ए स्टडी ऑफ फर्स्ट जनरेशन लर्नर्स ऑफ़ डिसअडवांटेज ग्रुप, इंडियन एजुकेशनल रिव्यू-वॉल्यूम-XXXXX, नंबर 2 जुलाई 2012, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
2. मधुरिमा चौधरी और अत्रेयी बनर्जी (2013) "राइट टू एजुकेशन ऑफ़ शैड्युल्ड ट्राइब: एन इंडियन पर्सपेक्टिव", वॉल्यूम 5(7), पीपी. 128-134, नवंबर 2013, डीओआई: 10.5897/आईजेईएपीएस2013.0315 आईएसएसएन 2141-6656, <http://www.academicjournals.org/IJEAPS>
3. अंबुसेल्ची जी., जॉन लेसन पी. (2015) एजुकेशन ऑफ़ ट्राइबल चिल्ड्रेन इन इंडिया। ए केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एंड इनोवेशन रिसर्च वॉल्यूम-4, इशू-3.
4. टी. ब्रह्मानंदम एंड टी. बोसु बाबू (2016) "एजुकेशनल स्टेटस अमंग द शैड्युल्ड ट्राइब्स", इश्यूज एंड चैलेंजेज", द एनइएचयू जर्नल वॉल्यूम XIV, नंबर 2, जुलाई-दिसंबर 2016, पीपी। 69-85, आईएसएसएन। 0972 - 8406।
5. डीके श्यामल। (2017) "ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ़ द एजुकेशनल स्टेटस ऑफ़ ट्राइबल इन वेस्ट बंगाल: विथ स्पेशल रिफरेंस टू द डिस्ट्रिक्ट पुरुलिया।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 7(10): 658-670।
6. गुरशरण सिंह, और बेअंत सिंह (2018) "एजुकेशन ऑफ़ शैड्युल्ड ट्राइब्स इन इंडिया ", वॉल्यूम 7, इशू 4, आईएसएसएन: 2319-8354।
7. राजीव भास्कर एट अल। (2019) "ट्राइबल पापुलेशन इन केरला डेवलपमेंट प्रोसेस : एन इम्पैक्ट इवैल्यूएशन ऑफ़ पॉलिसीज एंड स्कीम", रेविस्टा वेनेज़ोलाना डी एनालिसिस डी कोयुंटुरा, वॉल्यूम। XXV, नंबर 2, पीपी। 85-110, 2019।
8. टिमी थॉमस (2020) "ट्राइबल डेवलपमेंट थ्रू पीपुल्स पार्टिसिपेशन: ए स्टडी ऑफ़ वायनाड इन केरल", वॉल्यूम 11, इशू 8, पेज नंबर: 194, 2020, प्रोटियस जर्नल, आईएसएसएन/ईआईएसएसएन: 0889-6348।
9. श्रीमती वीनू (2021) "ट्राइबल एजुकेशन एंड क्वालिटी ऑफ़ लाइफ़: ", द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी आईएसएसएन 2348-5396 (ऑनलाइन) आईएसएसएन: 2349-3429 (प्रिंट) वॉल्यूम 9, इशू 1, जनवरी-मार्च, 2021।